IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 2, Issue 2, March 2022
Impact Factor: 6.252

मुक्तिबोध के काव्य में सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति

डॉ. लालजीत राम

असिस्टेंट प्रोफेसर–हिन्दी

पं. रामलखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, आलापुर, अम्बेडकर नगर उ0प्र0

शोध सारांश– गजानन माधव मुक्तिबोध नई कविता के प्रमुख स्तंभ और प्रगतिशील चेतना के सशक्त कवि हैं। उनका काव्य व्यक्तिवादी छटपटाहट से शुरू होकर गहरी सामाजिक अभिव्यक्ति तक पहुँचता है। मुक्तिबोध के लिए कविता आत्म के अँधेरे को चीरकर सामाजिक यथार्थ तक जाने की प्रक्रिया है।

उनकी सबसे चर्चित लंबी कविता 'अँधेरे में' पूँजीवादी व्यवस्था, मध्यवर्गीय कुंठा और बौद्धिक वर्ग की आत्म–स्वीकृति का दस्तावेज है। इसमें 'मैं' बार–बार खुद से टकराता है, क्योंकि वह अपने चारों ओर फैले शोषण, अन्याय और राजनीतिक पाखंड को देखकर तटस्थ नहीं रह पाता। 'जिन्दगी के कमरे में अँधेरा स्वाभाविक है' कहकर वे व्यवस्था–जनित निराशा को रेखांकित करते हैं। पर यह निराशा पलायनवादी नहीं, बल्कि विद्रोह की भूमिका है।

'ब्रह्मराक्षस' कविता में मुक्तिबोध बुद्धिजीवी वर्ग की त्रासदी दिखाते हैं। ब्रह्मराक्षस वह ज्ञानवान व्यक्ति है जो समाज से कटा हुआ है। मुक्तिबोध की सामाजिक अभिव्यक्ति का तीसरा आयाम फैंटेसी के माध्यम से आता है। वे यथार्थ को सीधे न कहकर प्रतीकों, बिम्बों और स्वप्न–यात्रा से कहते हैं। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' में वे सौंदर्य के नाम पर पलायन करने वाली कविता को नकारते हैं। उनके लिए सुंदर वही है जो सामाजिक विषमता को उजागर करे।

मध्यवर्गीय नौकरीपेशा व्यक्ति का अंतर्द्वंद्व, जनतंत्र में आम आदमी की बेबसी, और सत्ता का दमनचक्र उनके काव्य के बार–बार लौटने वाले विषय हैं। मुक्तिबोध आत्म–आलोचना करते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि बदलेगा वही जो पहले खुद को पहचानेगा। इस तरह मुक्तिबोध का काव्य केवल 'वैयक्तिक पीड़ा' का नहीं, बल्कि 'सामूहिक पीड़ा' का उद्घोष है।

मूल शब्द– वैचारिकी, वैयक्तिक, अन्तर्विरोधों, तेवर, आवेष्टित, स्निग्ध, तिलस्मी, पिचाशकाय।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in